17 सितम्बर 2020, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के
ग्रंथाधिराज समयसार पर
प्रवचनों का प्रसारण
अब **अरिहन्त चैनल** पर
अरिहंत प्रतिदिन
प्रात: 6:10 से 6:40 तक

वर्ष : 43, अंक : 12
सितम्बर (द्वितीय), 2020 (वीर नि.संवत्-2546)

संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

देश विदेश में ऑनलाइन दशलक्षण पर्व की धूम

दिनांक 23 अगस्त से प्रारम्भ हुआ दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में अत्यंत हर्षोल्लास के साथ ऑनलाइन मनाया गया। इस महापर्व के प्रसंग पर देश-विदेश में अपने-अपने घर बैठे हुए हजारों साधर्मियों ने बहुत उत्साह से धर्मलाभ लिया। प्रतिदिन पूजन-विधान, प्रवचन, संगोष्ठियाँ, जिनेन्द्र भक्ति, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं का आयोजन हुआ। यद्यपि सभी स्थानों पर लॉकडाउन के कारण मन्दिर बन्द रहे, तथापि साधर्मियों का आत्मसाधना के प्रति उत्साह कम नहीं हुआ, यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है।

अमेरिका : जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका (JAANA) के तत्त्वावधान में पूरे अमेरिका के लिये दशलक्षण पर्व का आयोजन ऑनलाइन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के दशलक्षण धर्म पर मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर के जीवन जीने की कला एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर के वज्रदंत चक्रवर्ती का बारह मासा विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रतिदिन पूजन-विधान के कार्य डॉ. विवेकजी शास्त्री इन्दौर एवं पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मुम्बई ने संपन्न कराये।

रविवार को गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का वीडियो प्रवचन एवं पौरांगजी पारेख द्वारा जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन हुआ। दो दिन निकिताजी पारेख ने बच्चों का प्रोग्राम कराया। एक दिन विद्वानों के सान्निध्य में Live शंका-समाधान का कार्यक्रम एवं अनंत चतुर्दशी के दिन विशेष प्रतिक्रमण पाठ भी रखा गया। समस्त कार्यक्रम श्री अतुलभाई-चारु खारा के निर्देशन में संपन्न हुये।

● **महाराष्ट्र :** यहाँ पर्व के अवसर पर सत्पथ फाउन्डेशन नागपुर द्वारा प्रात:काल जिनेन्द्र पूजन के उपरांत पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा प्रवचन हुआ। सायंकाल हिन्दी व मराठी भाषा में आयोजित जिनेन्द्र-भक्ति के अतिरिक्त सामायिक-प्रतिक्रमण आदि अनेक प्रकार के पाठ आयोजित किये गये। रात्रि में मराठी भाषा में प्रवचनों का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत **प्रथम प्रवचन** डॉ. नेमिनाथजी शास्त्री कुंभोज बाहुबली, पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर काटोल, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित विक्रांतजी शास्त्री सोलापुर, पण्डित गुलाबचंदजी बोरालकर एलोरा, पण्डित अनंतजी विश्वंभर सेलू, पण्डित जितेन्द्रजी राठी पुणे, पण्डित रवीन्द्रजी काले सोलापुर, पण्डित अमोलजी सिंघई हिंगोली, पण्डित जिनचंदजी आलमान हेरले आदि विद्वानों द्वारा विभिन्न विषयों पर एवं **द्वितीय प्रवचन** पण्डित प्रसन्नजी शेटे सांगली द्वारा दशलक्षण धर्म पर हुये। प्रवचनों के पश्चात् प्रश्नमंच का भी आयोजन हुआ।

सभी कार्यक्रम ज़ूम एप एवं यूट्यूब पर प्रसारित किये गये। देश-विदेश के सभी मराठी भाषी श्रोताओं ने प्रवचनों को बहुत पसंद किया एवं वर्षभर चलाने की भावना व्यक्त की।

समस्त कार्यक्रम डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित महावीरजी पाटील सांगली, पण्डित नंदकिशोरजी मांगुलकर काटोल, श्री प्रियदर्शनजी गहाणकरी के मार्गदर्शन में तथा डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर व पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर के निर्देशन में संपन्न हुये। कार्यक्रम का संयोजन पण्डित रवीन्द्रजी महाजन एवं पण्डित श्रुतेशजी सातपुते नागपुर ने किया।

● **मुम्बई :** यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर के आयोजकत्व में एवं Jainext के तत्त्वावधान में प्रात: जिनेन्द्र-पूजन, प्रवचन, तीन आयु वर्ग की कक्षाएं, ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई, डॉ. विवेकजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित सुदीपजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित राहुलजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित देवांगजी गाला मुम्बई, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित उर्विशजी शास्त्री देवलाली, श्रीमती स्वस्ति विराग जैन जबलपुर, विदुषी अनुप्रेक्षा

(शेष पृष्ठ 3 पर...)

⑤ सम्पादकीय –

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रथम अध्याय (पीठबंध प्ररूपण) का सार -

(गतांक से आगे...)

नवीन श्रोता का स्वरूप...

यहाँ जिनवाणी सुनने वालों के लिये टोडरमलजी लिखते हैं – 'भली होनहार है जिसकी...'। यहाँ हमें भली होनहार का सर्टिफिकेट मिल रहा है। पण्डितजी मोक्षमार्गप्रकाशक पढने वाले आत्मार्थियों को कह रहे हैं कि सद्भाग्य जागृत हो गया है, भाग्यशाली हो आप, किस्मत खुल गई है तुम्हारी, जिस व्यक्ति की किस्मत खुल जाती है, उसे जिनवचन सुनने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

भली होनहार मतलब अच्छा भविष्य, किसका अच्छा भविष्य? जिसे ऐसा विचार आता है कि...विचार...विचार...। इस ग्रंथ में पण्डित टोडरमलजी ने विचार के बहुत गीत गाये हैं। यहाँ उसे भाग्यशाली कह रहे हैं, जिसे ऐसा विचार आता है कि मैं कौन हूँ? मेरा क्या स्वरूप है? यह चरित्र कैसे बन रहा है? ये जो परिणाम होते हैं इन परिणामों का क्या फल लगेगा? ये जो जीव दु:खी हो रहा है तो दु:ख दूर करने का क्या उपाय है? इत्यादि विचारपूर्वक इतनी बातों का निर्णय करने से मेरा भला होगा। इन सब बातों का मुझे निर्णय करना है। मैं दु:खी हो रहा हूँ, पीड़ित हूँ, दु:ख कैसे दूर होगा? ऐसा विचार करने वाले श्रोता के बारे में इस पैराग्राफ की अन्तिम पंक्ति में टोडरमलजी ने कुछ शब्द दिये हैं – 'ये तो नवीन श्रोता का स्वरूप जानना'। जो लोग जिन्दगी में पहली बार जिनवाणी सुनने के लिये आकर बैठे हैं, भावपूर्वक आकर बैठे हों और विचार करते हों कि अहो! इन बातों से तो मेरा ही प्रयोजन सिद्ध होता हुआ दिखाई देता है, इससे दुनिया में किसी और का भला नहीं होगा। ये बातें पण्डितजी या आचार्यों के भले के लिये नहीं लिखी है। उनका तो होना था वो हो गया। ये जो बातें हैं इन बातों से तो मेरा प्रयोजन सिद्ध होगा। ये विचार जिसके मन में आता है और विचारपूर्वक जो जिनवाणी सुनने के लिये आता है वो सच्चा श्रोता जानना चाहिये। हम दु:खी हो रहे हैं या नहीं? क्या हमें दु:ख महसूस होता है? शिविर ... आयोजन आदि के लिये घोषणाएं हुई थी, इसलिये हम भी आ गये सुनने के लिये, बैठ गये, अब प्रवचन चल रहा है तो सुन लेते हैं – अरे भैया! इससे काम नहीं चलेगा। मैं कौन हूँ? ये दर्पण के सामने दिखने वाला मैं नहीं हूँ। ये जो मुखौटा दिखाई दे रहा है, ये मेरा स्वरूप नहीं है, इस देह के भीतर छिपा हुआ कोई और तत्त्व है, कैसे पहचानेगे उसे? मेरे दु:ख के कारण इस दुनिया में नहीं हैं, मैं क्यों दु:खी हो रहा हूँ, मैं क्यों पीड़ित हो रहा हूँ? जिसे भी ये विचार आता है और फिर इस विचारपूर्वक उद्यमवंत होकर अत्यंत प्रीतिपूर्वक शास्त्र सुनने के लिये आकर बैठता है, जिनवचनों को बहुत श्रद्धा से धारण करता है, स्वीकार करता है, उनके अर्थों का निश्चय करता है – ये तो नये-नये व्यक्ति की बात कर रहे हैं। सोचना एक बार अपने हृदय पर गंभीरता से हाथ रखकर कि क्या हम इस प्रकार के श्रोता हैं? क्या हम जिनवाणी इस प्रयोजन से सुनते हैं? क्या हमें ऐसा महसूस होता है कि इससे मुझे अपना प्रयोजन सिद्ध करना है? प्रयोजन सिद्ध न होने पर क्या हम अपने आपको टटोलते हैं? क्या विषय-कषाय, आरंभ-परिग्रह कुछ कम हुए हैं? विषयासक्ति कुछ कम हुई है? तत्त्वज्ञान की यह अमृतधारा मेरे अन्तर में प्रवेश कर रही है या नहीं? सोचना, विचार करना, रोजाना सुनते-सुनते कभी तो विचार करो! सुनने के बाद विचार करो, सुनने के लिये आने से पहले भी विचार करो। यहाँ टोडरमलजी प्रेरणा दे रहे हैं कि पहले भी विचार करो, क्योंकि विचार करेंगे तो सुनने के लिये आएंगे और फिर सुनेंगे तो सुनकर पुन: विचार करेंगे – दोनों तरफा विचार करना है। सुनकर विचार करना और विचार करके सुनने के लिये आना है।

बालबोध पाठमाला भाग-1 में देवदर्शन की विधि बतायी है। वहाँ लिखा है कि ऐसा नहीं कि मन्दिर गये, दर्शन किये, अष्टांग नमस्कार किये, कायोत्सर्ग किया और सब पूरा हो गया, छुट्टी हो गई। देवदर्शन की विधि में बताया है कि यदि उस समय जिनमंदिर में प्रवचन चल रहा हो तो पहले प्रवचन सुनना, यदि प्रवचन नहीं चल रहा हो तो कम से कम आधे घंटे बैठकर स्वयं ग्रंथ लेकर स्वाध्याय करना – इसके बिना आपके देवदर्शन की विधि पूरी नहीं होती। यदि हमें ऐसा लगता है कि हम तो स्वाध्याय करते हैं, प्रवचन भी सुन लेते हैं। तो ध्यान दीजिये इतने मात्र से देवदर्शन की विधि पूरी नहीं होती। वहीं पाठमाला में आगे लिखा है कि जो प्रवचन में सुना हो, जो शास्त्र में पढा हो, उसका कुछ देर बैठकर विचार और चिंतन करना कि मैं कौन हूँ? भगवान कौन हैं? मैं स्वयं भगवान कैसे बन सकता हूँ? जब तक ये विचार नहीं चलेंगे, तब तक देवदर्शन की विधि पूरी नहीं होती। यहाँ भी टोडरमलजी ने विचार को विशेष महत्व दिया है और ऐसा सब विचार करने वालों को पण्डित टोडरमलजी साहब ने नवीन श्रोताओं की श्रेणी में रखा है। (क्रमश:)

(पृष्ठ 1 का शेष...)

शास्त्री मुम्बई, विदुषी मुक्ति शास्त्री पुणे, श्रीमती श्रेया देवांग गाला मुम्बई आदि विद्वानों का समागम प्राप्त हुआ। रात्रि में अनेक ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

संपूर्ण कार्यक्रम डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की प्रेरणा एवं पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई व पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर के मार्गदर्शन में संपन्न हुये।

सभी कार्यक्रम ज़ूम एप एवं Jainext यूट्यूब चैनल पर प्रसारित किये गये, जिसका हजारों साधर्मियों ने लाभ लिया।

● **मुम्बई :** यहाँ पर्व के अवसर पर विभिन्न उपनगरों में ऑनलाइन प्रवचनों का आयोजन हुआ, जिसके अन्तर्गत **सीमंधर जिनालय (जवेरी बाजार) व देवलाली** में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री खनियांधाना, **घाटकोपर** में पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर व पण्डित विक्रांतजी शास्त्री सोलापुर, **भायन्दर** में डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, **दादर व बोरीवली** में ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, **मलाड** में पण्डित अश्विनभाई शाह द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

● **शिकागो (अमेरिका) :** यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर द्वारा प्रात:काल पूजन–विधान के उपरान्त 47 शक्तियों पर प्रवचन, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति व प्रतिक्रमण आदि एवं रात्रि में विभिन्न विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला। अमेरिका के अनेक नगरों के साधर्मियों ने ऑनलाइन आयोजित सभी कार्यक्रमों का लाभ लिया। इस अवसर पर प्रात:काल विदिशा मुमुक्षु मण्डल द्वारा समयसार पर प्रवचन एवं दोपहर में नवरंगपुरा–अहमदाबाद द्वारा प्रथमानुयोग की कथाएं आयोजित हुई।

● **दिल्ली :** यहाँ महापर्व के अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन दिलशाद गार्डन के संयुक्त तत्त्वावधान में ब्राह्मी सुन्दरी विद्या निकेतन विश्वासनगर के सहयोग से ऑनलाइन दशलक्षण पर्व मनाया गया।

इस अवसर पर प्रात: दशलक्षण मंडल विधान के उपरांत पण्डित अश्विनजी नानावटी द्वारा प्रवचन, दोपहर में पण्डित संभवजी शास्त्री शिवाजी पार्क द्वारा प्रवचन तथा पण्डित जे.पी. दोशी मुम्बई द्वारा तत्त्वार्थसूत्र पर प्रवचन तथा रात्रि में डॉ. मनोजजी जबलपुर द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। विधि विधान के कार्य पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा द्वारा संपन्न हुये।

समापन समारोह के अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अतिरिक्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. अनेकान्तजी जैन दिल्ली, डॉ. नीतेशजी शाह दुबई आदि विद्वानों के व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ।

समारोह में डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर, श्री सुनीलजी सर्राफ सागर, श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री नरेशजी लुहाड़िया दिल्ली, श्री राकेशजी जैन मुम्बई, श्री अभयजी जैन पाटनी कोलकाता, श्री अवनीशजी जैन हैदराबाद, श्री अजयजी जैन सागर, श्री संजयजी सेठी जयपुर, श्री प्रवीणजी जैन सी.ए. दिल्ली आदि महानुभाव उपस्थित थे।

मंगलाचरण श्री अनिलजी जैन जयपुर, स्वागत गीत महक रौनक शाह अहमदाबाद, दृषि जैन विवेक विहार व भव्या जैन विश्वास नगर ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में फैडरेशन के संयोजक श्री वज्रसेनजी, प्रधान श्री सुरेन्द्रजी मिंटू, मंत्री श्री अतुलजी जैन, समन्वयक श्री सुमितजी शास्त्री बड़ौत एवं समस्त फैडरेशन के सदस्य उपस्थित थे। सभा का संचालन पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर ने किया।

सभी कार्यक्रम ज़ूम एप एवं यूट्यूब चैनल (जैनिज्म थिंकर) पर प्रसारित हुये।**– नीरज जैन (महामंत्री–युवा फैडरेशन दिलशाद गार्डन, दिल्ली)**

● **कर्नाटक :** यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में जैनधर्म का अध्ययन संस्था के माध्यम से कन्नड भाषा में ई–दशलक्षण महापर्व मनाया गया। इस अवसर पर प्रात:काल विभिन्न विद्वानों द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुआ, दोपहर में पण्डित राजेन्द्रजी संगावे द्वारा तत्त्वार्थसूत्र के एक–एक अध्याय का सार बताया गया, सायंकाल विभिन्न विद्वानों द्वारा अनेक विषयों पर सेमिनार हुए एवं रात्रि में विदुषी धवलश्री ताई बेलगांव द्वारा प्रवचनसार (चरणानुयोगसूचक चूलिका) पर प्रवचन हुये।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन एवं डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के मार्गदर्शन में आयोजित सभी कार्यक्रमों का निर्देशन पण्डित बाहुबलीजी भोसगे, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित श्रीमंतजी नेज, पण्डित राजेन्द्रजी संगावे के निर्देशन में तथा पण्डित आकाशजी हलाज व पण्डित सिद्धांतजी शेट्टी के संयोजकत्व में संपन्न हुये। कार्यक्रम का प्रसारण जैनधर्म का अध्ययन नामक यूट्यूब चैनल पर किया गया, जिसका लगभग 7310 लोगों ने लाभ लिया।

● **उदयपुर (राज.) :** यहाँ नेमिनाथ जैन कॉलोनी हिरण मगरी सेक्टर 3 स्थित श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में प्रात:काल जिनेन्द्र–पूजन के उपरांत डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री द्वारा प्रतिदिन प्रातः समयसार (कर्ताकर्म अधिकार – गाथा 69–83) पर तथा सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति हितंकर जैन व निपेक्षा जैन द्वारा करवायी गई तथा रात्रि में द्रव्य–गुण–पर्याय के स्वरूप से स्वनिर्णय, वीतरागता, सर्वज्ञता, देव–शास्त्र–गुरु का स्वरूप आदि विभिन्न विषयों पर प्रवचन हुए। रात्रिकालीन प्रवचन में 1 दिन चार अभाव विषय पर हितंकरजी शास्त्री का प्रवचन हुआ। सभी कार्यक्रम ऑनलाइन प्रसारित किये गये। **– शांतिलाल लखावत (अध्यक्ष)**

● **ग्वालियर (म.प्र.) :** यहाँ समयसार विद्यानिकेतन आत्मायतन में पर्व के अवसर पर प्रात: पूजन के उपरांत पण्डित महेशचंदजी द्वारा समयसार पर प्रवचन, दोपहर में 'फोन इन प्रोग्राम' नामक प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री द्वारा दशलक्षण पूजन के अर्थ पर प्रवचन व पण्डित नितुलजी शास्त्री इन्दौर द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत मंगलवर्धिनी प्रतियोगिता आयोजित की गई।

● **दोहा (कतर) :** सऊदी अरब में कतर देश के दोहा नगर में दशलक्षण पर्व के अवसर पर सायंकाल पण्डित राजेशजी शास्त्री जयपुर द्वारा ज़ूम एप के माध्यम से दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त स्तुति, भजन आदि का कार्यक्रम भी हुआ।

● **खैरागढ (म.प्र.) :** यहाँ महापर्व के अवसर पर श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में मुमुक्षु मंडल व युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रातःकाल जिनेन्द्र–पूजन, आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के छहढाला पर प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रवचन, संयम गिड़िया द्वारा प्रवचन आधारित प्रश्नोत्तर एवं मुख्य बिंदुओं पर चर्चा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ़ द्वारा दशलक्षण धर्म विषय पर प्रवचन आदि कार्यक्रम हुये। सायंकाल प्रतिक्रमण, जिनेन्द्र–भक्ति, पण्डित संदीपजी बड़कुल शास्त्री खैरागढ़ द्वारा छहढाला पर कक्षा तथा पण्डित पन्नालालजी गिड़िया द्वारा समयसार पर कक्षा का आयोजन हुआ। रात्रि में श्रीमती श्रुति गिड़िया व संयम गिड़िया द्वारा ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सभी कक्षाओं व प्रवचन के पश्चात् ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तर एवं पुरस्कार वितरण भी हुआ। **– दुलीचंद जैन (अध्यक्ष)**

● **पुणे (महा.) :** यहाँ पर्व के अवसर पर डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' द्वारा फोरसाइट फाउण्डेशन पुणे के वेबिनार में दशलक्षण धर्म पर व्याख्यान हुये। सभी व्याख्यान डॉ. दीपक जैन वैद्य यूट्यूब चैनल पर भी अपलोड किये गये हैं।

विद्यानिकेतन की कक्षाएं चली

देशभर में चल रहे लॉकडाउन के समय का सदुपयोग करने के क्रम में **डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर** द्वारा आत्मार्थी विद्या निकेतन दिल्ली में अध्ययनरत बालिकाओं हेतु ट्रस्टियों के अनुरोध पर तत्त्वार्थसूत्र के आठवें, नौवें व दसवें अध्याय पर विगत 3 माह से कक्षाओं का आयोजन हुआ। सभी बालिकाओं ने अतिउत्साहपूर्वक अध्ययन किया एवं परीक्षाएं भी दी। सभी कक्षाएं ऑनलाइन ली गई।

ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व एक माह तक जीवसमास विषय पर भी डॉ. दीपकजी द्वारा कक्षाएं ली गई थी।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

स्वरूप ग्रहण की उग्रता चाहिए। कहीं भी चैन नहीं पड़े, विकल्प के जाल में भी चैन नहीं पड़े, कहीं भी सुख नहीं लगे, इतनी अंतर में उग्रता होनी चाहिए। स्वयं का अस्तित्व ग्रहण करे उसे सहज आनंद अंतर में से प्रगट होता है।

– (आत्मधर्म, अगस्त–2019 पृष्ठ 5 से साभार)

क्षमावाणी कार्यक्रम संपन्न

● **जयपुर (राज.) :** यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर एवं श्री ढाइद्वीप जिनायतन इन्दौर के निर्देशन में श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल दिल्ली एवं श्री दिव्यदेशना ट्रस्ट दिल्ली के तत्त्वावधान में ऑनलाइन क्षमावाणी पर्व मनाया गया, जिसके अन्तर्गत प्रातःकाल जिनेन्द्र–पूजन के उपरांत गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का वीडियो प्रवचन हुआ। तत्पश्चात् डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ द्वारा प्रवचन का लाभ मिला। दोपहर में पण्डित राकेशजी शास्त्री लोनी–दिल्ली के प्रवचनोपरांत **क्षमावाणी पर्व : एक अनुशीलन** विषय पर गोष्ठी का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर पल त्रिवेदी गांधीनगर ने क्षमावाणी पर्व की ऐतिहासिकता, अंकुर जैन खड़ैरी ने क्षमा और वाणी में सम्बन्ध, अखिल जैन मण्डीदीप ने खम्मामी सव्व जीवाणां....विवेचन, संभव जैन दिल्ली ने क्षमावाणी पर्व का प्रयोजन एवं अर्पित जैन भगवां ने क्षमावाणी पर्व में विकृतियाँ विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण संयम जैन दिल्ली, संयोजन अमन जैन आरोन एवं संचालन आप्त अनुशील जैन दमोह ने किया।

सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के उपरांत प्रथम प्रवचन पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं द्वितीय प्रवचन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा हुआ। अन्त में क्षमावाणी पर्व पर कविता पाठ श्रीमती ममता जैन दिल्ली द्वारा किया गया।

तीनों समय आभार प्रदर्शन क्रमशः श्री मनोजजी जैन दिल्ली, श्री आदीशजी जैन दिल्ली एवं श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली ने किया।

● **मुम्बई :** यहाँ क्षमावाणी के अवसर पर श्री मुम्बई दिगम्बर जैन सेवा संघ के तत्त्वावधान में रविवार, दिनांक 6 सितम्बर को सामूहिक क्षमावाणी कार्यक्रम मनाया गया, जिसमें डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के क्षमावाणी पर विशेष व्याख्यान का लाभ मिला।

इस अवसर पर समारोह की अध्यक्षता श्री एस.पी. जैन (अध्यक्ष–प्राईड ग्रुप) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में पद्मश्री विमलबाबू जैन पटना एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री आई.एस. जैन, श्री तरुणजी काला, श्री विमलजी जैन संघी, श्री डी.पी.जैन, श्री दिलीपजी पाण्ड्या, श्री भागचंदजी पहाड़िया, श्री मनोजजी जैन, श्री सुनीलजी सर्राफ सागर, श्री पंकजजी जैन, श्री पदमचंदजी गदिया आदि महानुभाव उपस्थित थे।

मंगलाचरण श्वेता चांदीवाल ने किया। अतिथियों का स्वागत, त्यागी–व्रतियों एवं प्रतिभावान छात्रों का सम्मान भी हुआ। क्षमावाणी–पाठ का वाचन डॉ. सुभाषजी चांदीवाल ने किया।

कार्यक्रम सेवा संघ के अध्यक्ष श्री कैलाशचंदजी छाबड़ा एवं महामंत्री डॉ. सुभाषजी चांदीवाल के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के संयोजक श्री कमलजी जैन, श्री मनीषजी जैन, श्री मनोजजी जैन व श्री कमलजी गंगवाल थे। संचालक श्री संजयराजा जैन ने किया।

● **नागपुर (महा.) :** यहाँ क्षमावाणी के अवसर पर आयोजित समारोह की अध्यक्षता डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अजितप्रसादजी वैभव दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अजितभाई बड़ौदा, श्री लक्ष्मीचंदजी बण्डी उदयपुर, श्री

नरेशजी सिंघई, श्री सतीशजी मोदी, श्री शरदजी मोदी, श्री सुरेन्द्रजी नखाते, श्री प्रियदर्शनजी गहाणकरी, डॉ. विमलाजी सिंघई, श्री राकेशजी मोदी आदि महानुभाव उपस्थित थे।

इस अवसर पर उपस्थित सभी विद्वानों व प्रमुख अतिथियों के उद्बोधन प्राप्त हुए। मंगलाचरण श्री विवेकजी टक्कामोरे ने एवं महापर्व की रिपोर्ट पण्डित श्रुतेशजी सातपुते ने प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर व पण्डित रवीन्द्रजी शास्त्री नागपुर ने तथा आभार प्रदर्शन डॉ. संजीवजी गोधा जयपुर ने किया। संपूर्ण कार्यक्रम डॉ. संजीवजी गोधा एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर के निर्देशन में संपन्न हुआ। **– नरेश सिंघई, सत्पथ फाउन्डेशन–नागपुर**

● **दुबई :** यहाँ क्षमावाणी के अवसर पर दिनांक 4 सितम्बर को डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं डॉ. नीतेशजी शाह द्वारा क्षमावाणी पर्व पर प्रश्नोत्तर के माध्यम से परिचर्चा हुई।

इसके अतिरिक्त बच्चों द्वारा भक्तामर स्तोत्र का पाठ हुआ। ऑनलाइन आयोजित इस कार्यक्रम में यू.ए.ई. के अनेक लोगों की शंकाओं का समाधान किया गया।

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय द्वारा आयोजित साप्ताहिक गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 6 सितम्बर को सप्तम् गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका विषय था **'षट्लेश्याएं : सैद्धांतिक व आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य में'**।

दो सत्रों में आयोजित इस गोष्ठी के प्रथम सत्र के अध्यक्ष पण्डित निपुणजी शास्त्री भोपाल एवं विशिष्ट अतिथि पण्डित निखिलजी शास्त्री मुम्बई थे। गोष्ठी में शाश्वत जैन ग्वालियर, अंकित जैन कुटोरा, अंशु जैन भगवां, कपिल जैन बम्होरी, भव्य जैन उदयपुर, शाश्वत जैन जयपुर ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

सत्र का मंगलाचरण दिव्यांश जैन बड़गांव एवं संचालन प्रासुक जैन रानीताल ने किया।

द्वितीय सत्र के अन्तर्गत अध्यक्षता पण्डित अनुभवजी शास्त्री कानपुर ने की। गोष्ठी में वैभव जैन सागर, आदित्य जैन, अनेकान्त जैन वासा, स्वस्ति सेठी जयपुर एवं प्रांजल जैन भोपाल ने अपने विचार व्यक्त किये।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में कपिल जैन बम्होरी (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं स्वस्ति जैन सेठी जयपुर (शास्त्री द्वितीयवर्ष) ने स्थान प्राप्त किया।

सत्र का मंगलाचरण आर्जव जैन दिल्ली एवं संचालन प्रासुक जैन झांसी ने किया। गोष्ठी का संयोजन आप्त अनुशील जैन दमोह, अखिल जैन मण्डीदीप, अमन जैन आरोन, पवित्र जैन आगरा व संभव जैन दिल्ली ने किया एवं आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

अपना नाम एवं पता सहित सही जवाब सादे कागज पर लिखकर वाट्सअप पर ही भेजें, भेजने की अंतिम तिथि 15 अक्टूबर 2020 है। प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार के अतिरिक्त 5 सांत्वना पुरस्कार भी दिये जायेंगे।
वाट्सअप पर भेजने हेतु – 9660668506 (पीयूष कुमार जैन)

पं. टोडरमलजी के 300वें जन्मजयंती वर्ष के अवसर पर प्रस्तुत है – ज्ञानपहेली

मोक्षमार्गप्रकाशक – अध्याय 4 (मिथ्यादर्शन–ज्ञान–चारित्र का निरूपण)

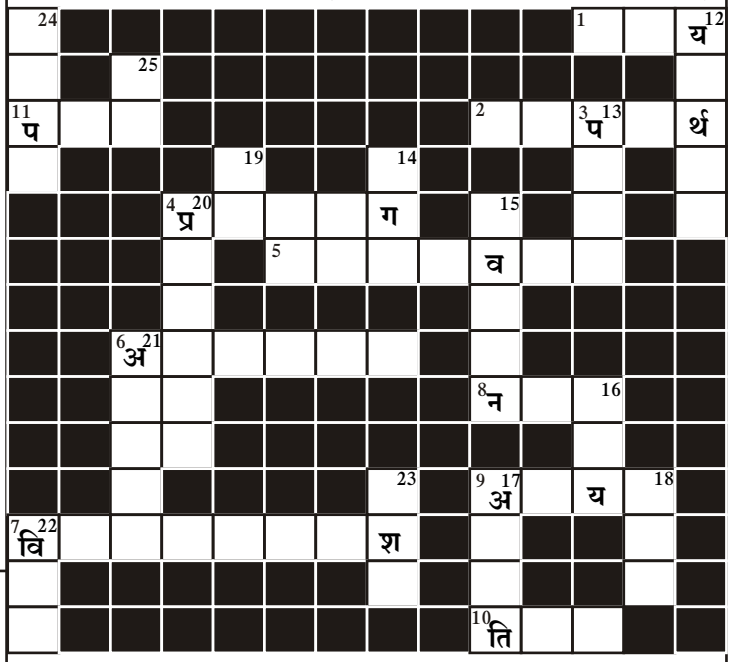

बाएं से दाएं –

1. कर्म के निमित्त से जीव क्या धारण करता है? (3)
2. वस्तु का ..... जैसा नहीं है, वैसा मानना वह मिथ्यादर्शन है। (3)
3. केवलज्ञान के बिना सभी ..... यथार्थ भासित नहीं होते। (3)
4. अव्रत का मूल कारण (5)
5. शरीर और आत्मा का संबंध (7)
6. मिथ्याज्ञान का एक भेद (6)
7. विपरीत अभिप्राय को कहते हैं (8)
8. पाप करके जीव कहाँ गमन करता है (3)
9. अविरति का दूसरा नाम (4)
10. किन गति के जीवों के ज्ञानावरण का क्षयोपशम होने पर भी प्रयोजनभूत का जानना हो जाता है (3)
11. प्रमाण का एक भेद (3)

ऊपर से नीचे –

12. ज्ञानावरण के क्षयोपशम से क्या होता है? (5)
13. अव्रत का एक भेद (4)
14. घातकों के घातकों से क्या होता है? (2)
15. ग्रैवेयक के देव किससे युक्त होते हैं? (5)
16. चारित्रमोह के उदय से जो भाव होता है (3)
17. मिथ्याचारित्र का ही एक दूसरा नाम (4)
18. मोह की .....(3)
19. पुण्य–पाप के उदय को भला–बुरा जानना क्या है (2)
20. जीवादिक पदार्थ हैं (6)
21. अनिष्ट को कहते हैं (5)
22. मिथ्यात्वादि भाव कैसे हैं (3)
23. विरुद्धता सहित दो रूप ज्ञान को कहते हैं (3)
24. दुःख दूर करने के लिये प्रथम किसका ज्ञान होना चाहिये (4)
25. तिनिकी सत्ता नाश करि, प्रगटै .....उपाव (2)

प्रस्तुति – आप्तअनुशील शास्त्री, दमोह

मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ

8

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

तीसरा छन्द

एकत्व-ममत्व की बात पूर्ण हो जाने के बाद अब कर्तृत्व-भोक्तृत्व की बात करते हैं।

मैं ही मेरा कर्त्ता-धर्त्ता,
मुझ में पर का कुछ काम नहीं।
मैं मुझ में रहने वाला हूँ,
पर में मेरा विश्राम नहीं।।३।।

मेरा कर्त्ता-धर्त्ता और भोक्ता मैं ही हूँ। पर पदार्थ मुझमें कुछ भी नहीं करते। न करते हैं और न कुछ कर सकते हैं।

इसीप्रकार मुझसे भिन्न पर पदार्थ भी स्वयं के कर्त्ता-धर्त्ता-भोक्ता हैं; उनमें कुछ करना मेरा काम नहीं है। उनमें कुछ करने का बोझा मुझे अपने माथे पर नहीं रखना है।

मेरा आवास (रहना) मुझमें ही है; किसी अन्य पदार्थ में रहना मेरा स्वरूप नहीं है; मुझे विश्राम स्वयं में ही प्राप्त होता है, अन्यत्र कहीं नहीं।

जिसप्रकार कहा था कि पर घर जाना नाम धराना है; उसीप्रकार पर में विश्राम खोजना भी हराम है, आराम नहीं, विश्राम नहीं। **विश्राम तो मुझे स्वयं में ही प्राप्त होता है।**

इसप्रकार इस छन्द में यह स्पष्ट कर दिया गया है कि **एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कर्त्ता-भोक्ता नहीं है; क्योंकि प्रत्येक द्रव्य स्वयं के सब कार्य करने में पूर्ण समर्थ हैं।**

एक द्रव्य को दूसरे द्रव्य का कर्त्ता-भोक्ता मानना अनन्त गुलामी का सिद्धान्त है; अनन्त भय उत्पन्न करने वाली मान्यता है।

उक्त सन्दर्भ में मैंने **आत्मा ही है शरण** नामक कृति में विस्तार से लिखा है; उसका महत्त्वपूर्ण अंश इसप्रकार है -

''**जो व्यक्ति यह मानता है कि मैं दूसरो को मारता हूँ या दूसरे मुझे मारते हैं; मैं दूसरों की रक्षा करता हूँ या दूसरे मेरी रक्षा करते हैं; मैं दूसरों को सुखी-दुःखी करता हूँ या दूसरे मुझे सुखी-दुःखी करते हैं; वह व्यक्ति मूढ़ है, अज्ञानी है; तथा ज्ञानियों की मान्यता इससे विपरीत होती है। तात्पर्य यह है कि एक द्रव्य को दूसरे द्रव्य का कर्त्ता-धर्त्ता-हर्त्ता मानना अज्ञान है, मिथ्यात्व है।**

इस महान सिद्धान्त को जगत के समक्ष रखते हुए आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने समयसार के बंधाधिकार में **करणानुयोग को आधार बनाकर** जो वजनदार युक्तियाँ प्रस्तुत की हैं; वे अपने आप में अद्भुत हैं, अकाट्य हैं।

सौ इन्द्रों की उपस्थिति में, चार ज्ञान के धारी गणधरदेव की उपस्थिति में, तीर्थंकर परमात्मा अरहंतदेव ने अपनी दिव्यध्वनि में डंके की चोट पर यह बात कही है कि जगत का प्रत्येक प्राणी **अपने आयुकर्म के क्षय से मरण को प्राप्त होता है और आयुकर्म के उदय से ही जीवित रहता है तो फिर कोई किसी के जीवन-मरण का उत्तरदायी कैसे हो सकता है?**

जब तुम किसी के आयुकर्म का हरण नहीं कर सकते हो तो फिर उसे मार भी कैसे सकते हो? इसीप्रकार जब कोई अन्य व्यक्ति तुम्हारे आयुकर्म का हरण नहीं कर सकता है तो वह तुम्हें भी कैसे मार सकता है?

यही बात जीवन के संदर्भ में भी कही जा सकती है।

जब प्रत्येक प्राणी अपने आयुकर्म के उदय से जीवित रहता है और जब तुम किसी को आयुकर्म दे नहीं सकते हो तो फिर तुम उसकी रक्षा भी किसप्रकार कर सकते हो?

इसीप्रकार जब कोई अन्य व्यक्ति तुम्हें आयुकर्म नहीं दे सकता है तो फिर वह तुम्हारी रक्षा भी किसप्रकार कर सकता है?

इसीप्रकार सुख-दुःख के सन्दर्भ में भी घटित कर लेना चाहिए।

प्रत्येक जीव अपने शुभकर्म के उदयानुसार लौकिक सुख प्राप्त करता है, अनुकूल संयोग प्राप्त करता है और अपने अशुभकर्म के अनुसार दुःख प्राप्त करता है, प्रतिकूल संयोग प्राप्त करता है। यह परमसत्य जिनेन्द्र भगवान की वाणी में आया है।

जब तुम किसी को भी शुभाशुभकर्म नहीं दे सकते हो तो उसे सुखी-दुःखी भी कैसे कर सकते हो? इसीप्रकार जब कोई तुम्हें शुभाशुभकर्म नहीं दे सकता है तो वह तुम्हें भी सुखी-दुःखी कैसे कर सकता है?

तात्पर्य यह है कि **प्रत्येक प्राणी अपने सुख-दुःख एवं जीवन-मरण का कर्त्ता-धर्त्ता-हर्त्ता स्वयं ही है, अपने भले-बुरे का उत्तरदायी भी पूर्णतः स्वयं ही है।**

इस परमसत्य से अपरिचित होने के कारण ही अज्ञानीजन अपने सुख-दुःख एवं जीवन-मरण का कर्त्ता-धर्त्ता-हर्त्ता अन्य जीवों को मानकर अकारण ही उनसे राग-द्वेष किया करते हैं। अज्ञानी के ये राग-द्वेष-मोह परिणाम ही उसके अनन्त दुःखों के मूल कारण हैं। **(क्रमशः)**

पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् द्वारा आयोजित –

ऑनलाइन तत्त्वार्थसूत्र परिचर्चा संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रतिदिन तत्त्वार्थसूत्र के एक-एक अध्याय पर परिचर्चा हुई।

● दिनांक 23 अगस्त को प्रथम अध्याय पर परिचर्चा हुई, जिसकी अध्यक्षता डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली ने की।

इस अवसर पर डॉ. महेशजी शास्त्री भोपाल ने नैगमादि सप्त नय, पण्डित सोनूजी शास्त्री सोनगढ ने सम्यग्ज्ञान : स्वरूप व भेद-प्रभेद, पण्डित परेशजी शास्त्री जयपुर ने अधिगम के उपाय और उनके प्रयोजन एवं पण्डित गौरवजी उखलकर जयपुर ने मोक्षमहल की प्रथम सीढी विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण विदुषी परिणति शास्त्री विदिशा एवं संचालन पण्डित अमनजी शास्त्री दिल्ली ने किया।

● दिनांक 24 अगस्त को द्वितीय अध्याय पर परिचर्चा हुई, जिसकी अध्यक्षता डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर ने की।

इस अवसर पर पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा ने जन्म व शरीर के भेद-प्रभेद, पण्डित मनीषजी कहान जयपुर ने इन्द्रियाँ : स्वरूप-भेद-स्वामी व विषय, पण्डित अमोलजी सिंघई औरंगाबाद ने जीव के असाधारण भाव एवं विदुषी प्रतीति मोदी नागपुर ने जीव का लक्षण व भेद-प्रभेद विषय पर अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का मंगलाचरण अक्षयजी जैन दलपतपुर एवं संचालन आकाशजी जैन हलाज ने किया।

● दिनांक 25 अगस्त को तृतीय अध्याय पर परिचर्चा हुई, जिसकी अध्यक्षता डॉ. अरुणजी शास्त्री जयपुर ने की।

इस अवसर पर पण्डित विक्रांतजी शास्त्री सोलापुर ने जम्बूद्वीप व मनुष्यों का वर्णन, पण्डित प्रसन्नजी शास्त्री कोल्हापुर ने मध्यलोक की रचना, पण्डित मंथनजी गाला मुम्बई ने अधोलोक व नारकियों का वर्णन एवं पण्डित अनुभवजी शास्त्री खनियांधाना ने तीन लोक रचना : संक्षिप्त परिचय विषय पर अपने मनोभाव व्यक्त किये। कार्यक्रम का मंगलाचरण आकाशजी जैन मौ एवं संचालन पण्डित नीशूजी शास्त्री जयपुर ने किया।

● दिनांक 26 अगस्त को चतुर्थ अध्याय पर परिचर्चा हुई, जिसकी अध्यक्षता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने की।

इस अवसर पर पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ ने कल्पातीत देव व उनकी विशेषता, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर ने ऊर्ध्वलोक की रचना, विदुषी प्रतीति मोदी नागपुर ने कल्पोपपन्न देवों का वर्णन एवं पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री जसवंतनगर ने भवनवासी-व्यंतरवासी-ज्योतिष्क देवों का विवेचन विषय पर अपना मन्तव्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण अंकुरजी जैन खड़ैरी एवं संचालन डॉ. विवेकजी शास्त्री इन्दौर ने किया।

● दिनांक 27 अगस्त को पंचम अध्याय पर परिचर्चा हुई, जिसकी अध्यक्षता डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर ने की।

इस अवसर पर डॉ. नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर ने अर्पितानर्पितसिद्धेः, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर ने द्रव्य के भेद-प्रभेद, डॉ. श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर ने द्रव्यों के अस्तिकाय आदि विभाजन एवं पण्डित संयमजी शास्त्री नागपुर ने द्रव्य के विभिन्न लक्षणों का समन्वय विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण अर्पितजी जैन भगवां एवं संचालन विदुषी अनुप्रेक्षा शास्त्री मुम्बई ने किया।

● दिनांक 28 अगस्त को षष्टम् अध्याय पर परिचर्चा हुई, जिसकी अध्यक्षता डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ ने की।

इस अवसर पर पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर ने घातिकर्मों के आस्रव का कारण, पण्डित नंदकिशोरजी मांगुलकर काटोल ने अघातिकर्मों के आस्रव का कारण एवं पण्डित शुभमजी शास्त्री ज्ञानोदय भोपाल ने आस्रव का स्वरूप-भेद व विशेषता विषय पर अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का मंगलाचरण शिवराज स्वामी मानगांव एवं संचालन पण्डित समर्थजी शास्त्री विदिशा ने किया।

● दिनांक 29 अगस्त को सप्तम् अध्याय पर परिचर्चा हुई, जिसकी अध्यक्षता डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर ने की।

इस अवसर पर पण्डित राकेशजी दिल्ली ने व्रतों के अतिचार, पण्डित बाहुबलीजी भोसगे धारवाड ने सल्लेखना का स्वरूप व अतिचार, पण्डित अशोकजी मांगुलकर राघौगढ ने श्रावक के व्रत व उनके भेद-प्रभेद एवं पण्डित नयनजी शास्त्री बरायठा ने व्रतों की भावनाएं विषय पर अपने मनोभाव व्यक्त किये।

कार्यक्रम का मंगलाचरण दिव्यांशजी जैन अलवर एवं संचालन पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर ने किया।

● दिनांक 30 अगस्त को अष्टम् अध्याय पर परिचर्चा हुई, जिसकी अध्यक्षता डॉ. प्रवीणकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा ने की।

इस अवसर पर डॉ. संजयजी शास्त्री दौसा ने अनुभाग व प्रदेशबन्ध की विशेषता, पण्डित संजयजी राउत औरंगाबाद ने स्थितिबंध का विवेचन, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री पुणे ने प्रकृतिबंध का विवरण एवं पण्डित अनिलजी शास्त्री जयपुर ने कर्मबन्ध : स्वरूप-कारण व भेद विषय पर अपना मन्तव्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण समकितजी जैन ईसागढ एवं संचालन पण्डित अभिषेकजी जोगी मुम्बई ने किया।

● दिनांक 31 अगस्त को नवम् अध्याय पर परिचर्चा हुई, जिसकी अध्यक्षता पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई ने की।

इस अवसर पर डॉ. महेन्द्रजी शास्त्री 'मुकुर' मुम्बई ने ध्यान : स्वरूप व भेद-प्रभेद, पण्डित जयराजनजी शास्त्री चेन्नई ने तपसा निर्जरा च, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर ने परिषहजय का विशेष विवेचन एवं

पण्डित अमनजी शास्त्री कृष्णानगर दिल्ली ने संवर का लक्षण व कारण विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण जय मुलावकर डासाला एवं संचालन पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन ने किया।

● दिनांक 1 सितम्बर को दशम् अध्याय पर परिचर्चा हुई, जिसकी अध्यक्षता पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने की।

इस अवसर पर पण्डित रीतेशजी शास्त्री डडूका ने तत्त्वार्थसूत्र के अध्ययन की आवश्यकता, पण्डित विक्रांतजी पाटनी झालरापाटन ने मुक्तजीवों के भेद, पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर ने मोक्ष का स्वरूप व विशेषता एवं पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल जयपुर ने केवलज्ञान की उत्पत्ति का वर्णन विषय पर अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का मंगलाचरण एवं संचालन पण्डित विनयजी शास्त्री मुम्बई ने किया। परिचर्चा के संयोजक जिनकुमारजी शास्त्री रहे।

दशलक्षण पर्व के अवसर पर –

डॉ. संजीवजी गोधा द्वारा अपूर्व धर्मप्रभावना

देश की विभिन्न संस्थाओं एवं मुमुक्षु मण्डलों के आमंत्रण पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा अपूर्व धर्मप्रभावना हुई। पर्व के अवसर पर प्रतिदिन प्रात: दिगम्बर जैन **महासमिति** द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित कार्यक्रम में अद्भुत कर्मसिद्धांत, दोपहर में **टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर** द्वारा आयोजित कार्यक्रम में तत्त्वार्थसूत्र के एक-एक अध्याय पर सारगर्भित व्याख्यान, सायंकाल जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ **नॉर्थ अमेरिका (JAANA)** के तत्त्वावधान में मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रंथ के एक-एक अध्याय का सार और रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। तीनों समय के कार्यक्रम दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल **कोलकाता** के लिये भी विशेष रूप से प्रसारित किये गये। सभी प्रवचनों का प्रतिदिन हजारों साधर्मियों ने **drsanjeevgodha Youtube** चैनल पर ऑनलाइन धर्मलाभ लिया।

इसके अतिरिक्त विविध संस्थाओं द्वारा मनाये जा रहे दशलक्षण पर्व में भी प्रवचन, उद्बोधन आदि द्वारा धर्मप्रभावना की गई, जिनमें सत्पथ फाउन्डेशन **नागपुर**, चैतन्यधाम **गांधीनगर**, तीर्थधाम मंगलायतन **अलीगढ**, मुमुक्षु मण्डल **सिंगापुर**, मद्रास विश्वविद्यालय **चेन्नई**, दिगम्बर जैन सेवा संघ **मुम्बई**, जैन स्वाध्याय ग्रुप **यू.ए.ई.** आदि सम्मिलित हैं।

एस.पी. भारिल्ल द्वारा विशेष धर्मप्रभावना

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात:काल जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका (JAANA) के तत्त्वावधान में एवं सायंकाल एक साथ तीन स्थानों पर दिगम्बर जैन महासमिति, दिगम्बर जैन महिला मण्डल मुम्बई तथा जैन सोश्यल ग्रुप (नॉर्दर्न रीजन) के तत्त्वावधान में प्रसिद्ध लेखक एवं ख्यातिप्राप्त विद्वान पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा आखिर धर्म भी कोई करने की चीज़ है?, हम दुखी क्यों हैं?, भगवान को क्यों पूजें?, इन भावों का फल क्या होगा?, पुण्य पाप और धर्म का मतलब क्या? क्या गति के अनुसार मति है?, कर्मों से मुक्ति का उपाय क्या?, विकल्पों का मायाजाल, आकुलतारहित जीवन का एक ही उपाय, प्रकृति का नियम कण-कण की स्वतंत्रता आदि विषयों पर व्याख्यानों का लाभ मिला।

सभी कार्यक्रम ज़ूम एप एवं यूट्यूब चैनल पर प्रसारित किये गये, जिसका हजारों साधर्मियों ने लाभ लिया।

क्रमबद्धपर्याय कार्यशाला का परीक्षा परिणाम

मुम्बई : यहाँ सोमैया विश्वविद्यालय के जैन अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी जैन द्वारा क्रमबद्धपर्याय विषय पर दिनांक 15 से 30 अगस्त तक 15 दिवसीय एक कार्यशाला का आयोजन व्हाट्सएप पर किया गया, जिसमें 1995 में आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर देवलाली में हुए डॉ. हुकमचंद भारिल्ल के प्रवचनों का प्रतिदिन प्रसारण किया गया। इस कार्यशाला के अंतिम दिन ऑनलाइन परीक्षा ली गई, जिसमें 41 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

परीक्षा परिणाम के अनुसार हर्षिता जैन (48/50) ने प्रथम, दीप्ति मेहता 44/50 ने द्वितीय एवं डॉ. रवि कुमार जैन 40/50 ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इन विजेताओं को आयोजक की ओर से क्रमश: 2500/-, 1500/- और 1000/- रुपये प्रदान किए जाएंगे।

आवश्यक सूचना

पण्डित टोडरमल स्मारक से प्रकाशित जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) एवं वीतराग-विज्ञान (मासिक) पत्रिकाएं ईमेल या मोबाइल पर मंगाने हेतु - सम्पर्क करें - 9660668506 **(पीयूष कुमार जैन)**

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com

प्रकाशन तिथि : 13 सितम्बर 2020

प्रति,